Rohtas Mahila College, SASARAM
Study Material: SANSKRIT
B.A. Part III, Paper VII

Dr. Santosh Singh
Associate Professor
Deptt of Sanskrit
R.M.C SASARAM

04.09.2020

Topic "संस्कृत नाटकों में अर्थोपक्षेपकों की आवश्यकता स्वरूप एवं लक्षण" (शेष भाग)

नाटकों में जो वृत्तान्त जो कथा अंश या विषयवस्तु नीरस है, जिनका मञ्च पर प्रदर्शित किया जाना नैतिकता आदि की दृष्टि से अनुचित अथवा प्रतिबंधित सा है वे वृत्तांश कथांश सूच्य कहलाते हैं। नाटककार उन वृत्तांशों की सूचना अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग पात्रों के माध्यम से करता है जिस सन्दर्भ में पूर्व में प्रवेशक और विष्कम्भक की व्याख्या अथवा स्वरूप निरूपण किया जा चुका है। इसी क्रम में अंकावतार का लक्षण इस प्रकार है—

अंकान्ते सूचितः पात्रैस्तदङ्कस्याविभागतः ।
यत्राङ्कोऽवतरत्येषाऽङ्कावतार इति स्मृतः ॥ (विश्वनाथः)

जहाँ अविच्छिन्न रूप से (बिना क्रम टूटे) प्रवाहित पूर्व अंक के कथा क्रम में ही दूसरे अंक की वस्तु का अवतरण होता है, वहाँ अङ्कावतार होता है। इसमें सूचना के लिए अन्य पात्र के प्रवेश के बिना ही

एवं अंक में अनिवार्य उपस्थित पात्रों को ही पात्र बनाकर, एवं अंक के अतिहतांश को बिना विच्छिन्न किए ही दूसरा अंक अवतरित हो जाता है, और विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका तथा अंकास्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पंचम सर्ग अंत में पात्रों द्वारा सूचित छठा अंक उसका अंग सा बनकर अवतीर्ण हुआ है।

चूलिका

अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना ॥

नेपथ्य से (परदे के भीतर) स्थित पात्रों द्वारा जब किसी वस्तु विशेष की सूचना दी जाय, वह 'चूलिका' नामक अर्थोपक्षेपक कहा जाता है। जैसे भवभूति के उत्तररामचरित नाटक के द्वितीय अंक के आरम्भ में - (नेपथ्य / पर्दे के पीछे से) तपोधना (आत्रेयी) का स्वागत है। इसके बाद तपोधना आत्रेयी प्रवेश करती है। यहाँ नेपथ्य में स्थित वासन्ती (पात्र) के द्वारा आत्रेयी के आगमन की सूचना दी गयी है। अतः 'चूलिका' है।

अंकास्य

अङ्कान्तपात्रैरङ्कास्यं छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात् ।

जहाँ अंक की समाप्ति के अवसर पर उस अंक में प्रयुक्त पात्रों के द्वारा किसी छूटे हुए अर्थ की सूचना दी जाती है, वहाँ 'अङ्कास्य' होता है। जैसे भवभूति के महावीरचरित नाटक के दूसरे अंक के अंत में सुमन्त्र का प्रवेश और पुनः वशिष्ठ और विश्वामित्र का संवाद।

समाप्त

[illegible] सिंह
[illegible] 9.20